पाठ 17. जलियाँवाला बाग

कविता का परिचय

कवयित्री बाग का चित्रण करते हुए कहती हैं कि इस बाग में कोयल नहीं कौए शोर मचाते हैं। चारों ओर घूमने वाले काले-काले कीड़े भँवरे होने का भ्रम पैदा करते हैं। चारों ओर केवल कँटीली झाड़ियाँ ही नज़र आ रही हैं। बाग में खिलने वाले पुष्प मानो सूख गए हैं। फूलों के पराग से खुशबू चली गई है और सारा का सारा बाग ऐसा लग रहा है मानो खून से भीग गया हो। कवयित्री ऋतुराज को इस बाग में बहुत धीरे से आने का आग्रह कर रही हैं क्योंकि वह इस स्थान के शोकपूर्ण माहौल को तोड़ना नहीं चाहती। कवयित्री हवा से मंद चाल से चलकर वहाँ आने को कह रही हैं। कोयल को दुख भरे राग गाने को कह रही हैं और भँवरों को प्रेम नहीं कष्ट की कथा सुनाने को कह रही हैं। वह वसंत को इस बाग में आकर पूजा भाव दर्शाने का आग्रह कर रही है। कवयित्री वसंत से उन सभी मृत बालकों, वृद्धों व नवयुवकों को श्रद्धांजलि अर्पित करने को कह रही हैं जो इस बाग में अंग्रेज़ों की गोलियों का शिकार हो असमय ही इस दुनिया से चले गए।

कविता में निहित जीवन-मूल्य

वे सभी पूजनीय हैं जिन्होंने भारतवर्ष की आज़ादी की लड़ाई में अपना थोड़ा-सा भी योगदान दिया है। हमें उन सभी को पूर्ण श्रद्धा के साथ याद करना है जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

कविता का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में कविता के भाव को पहले स्पष्ट करें। कविता में कवयित्री के जलियाँवाला बाग के प्रति करुणापूर्ण भावों से बच्चों को परिचित करवाएँ। कविता का सस्वर वाचन करें। बच्चों को कविता कंठस्थ करने को कहें। चार या पाँच बच्चों के समूह को एक साथ मिलकर कविता सुनाने को कहें।

महत्वपूर्ण चर्चा

- भारत के स्वतंत्रता-संग्राम पर बच्चों से चर्चा करें।
- जलियाँवाला बाग की घटना पर बच्चों के विचार जानें।
- अंग्रेज़ों के क्रूर व्यवहार के लिए उनके मन में क्या भावनाएँ उत्पन्न होती हैं, उसे जानें।
- यदि बच्चों को जलियाँवाला बाग जाने का अवसर मिले तो वे वहाँ जाकर क्या करना चाहेंगे, उनसे पूछें।